सूरह — एक कहानी

सूरह अल-अहज़ाब

लश्कर

पूरा सफ़र — ख़ंदक़, अमानत, और बेहतरीन नमूना —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 33 • 73 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

या अय्युहन्-नबिय्युत्-तक़िल्-लाह व ला तुति'इल्-काफ़िरीन वल्-मुनाफ़िक़ीन
1. ऐ नबी, अल्लाह से डरो और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की बात मत मानो।

व इज़ ज़ाग़तिल्-अब्सारु व बलग़तिल्-क़ुलूबुल्-हनाजिर
10. और जब निगाहें पथरा गईं और दिल गलों को आ पहुँचे।

लक़द काना लकुम फ़ी रसूलिल्-लाहि उस्वतुन हसनह
21. बेशक तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में एक बेहतरीन नमूना है।

व लाकिर्-रसूलल्-लाहि व ख़ातमन्-नबिय्यीन
40. बल्कि वो अल्लाह के रसूल और नबियों की मुहर (आख़िरी) हैं।

इन्नल्-लाह व मलाइकतहू युसल्लून 'अलन्-नबिय्य
56. बेशक अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर दुरूद भेजते हैं।

इन्ना 'अरज़्नल्-अमानत 'अलस्-समावाति वल्-अर्ज़ि वल्-जिबाल
72. बेशक हमने अमानत को आसमानों, ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश किया।

अल्लाह से डरो, लोगों से नहीं

बेटा, ये सूरह मदीना में नाज़िल हुई, एक ऐसे साल में जिसने मुसलमानों को उस से पहले के हर साल से ज़्यादा सख़्ती से आज़माया। और ये ख़ुद नबी ﷺ को एक हुक्म से खुलती है:

'**या अय्युहन्-नबिय्युत्-तक़िल्-लाह व ला तुति'इल्-काफ़िरीन वल्-मुनाफ़िक़ीन** — ऐ नबी, **अल्लाह से डरो** और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की **बात मत मानो** — **इन्नल्-लाह काना 'अलीमन हकीमा** — बेशक, अल्लाह जानने वाला, हिकमत वाला है — **वत्तबि' मा यूहा इलैक मिर्-रब्बिक** — और उस की **पैरवी** करो जो तुम्हारे रब की तरफ़ से वही की जाती है — **व तवक्कल 'अलल्-लाह** — **और अल्लाह पर भरोसा करो** — **व कफ़ा बिल्लाहि वकीला** — और अल्लाह कार-साज़ के तौर पर काफ़ी है।'

बेटा, यहाँ दिया गया अंदाज़ ग़ौर कीजिए: अल्लाह से डरो, लोगों के दबाव को रद्द करो, जो वही की जाए उसकी पैरवी करो, और उसपर भरोसा रखो। **ये दबाव में एक मोमिन का मुकम्मल अंदाज़ है** — और यही वो है जो इस सूरह का बाक़ी हिस्सा अमली तौर पर दिखाएगा।

फिर सूरह जाहिलियत के दौर की कई रुसूम ख़त्म करती है। उन में, गोदलिए (adoption) इस मफ़्हूम में कि एक बच्चे को क़ानूनी तौर पर अपना बेटा बना लेना, ख़ानदानी नाम बदल कर: '**व मा ज'अल अद्'इया-अकुम अब्ना-अकुम** — और उसने तुम्हारे **ले-पालक** बेटों को तुम्हारे (असली) **बेटे** नहीं बनाया — **ज़ालिकुम क़ौलुकुम बि-अफ़्वाहिकुम** — ये महज़ तुम्हारे मुँह की बात है — **वल्लाहु यक़ूलुल्-हक़्क़ व हुव यह्दिस्-सबील** — मगर अल्लाह **हक़** कहता है, और वो रास्ते की हिदायत देता है।'

'उद्'ऊहुम लि-आबाइहिम हुव अक़्सतु 'इन्दल्-लाह — उन्हें उनके बापों के नाम से पुकारो; ये अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा इंसाफ़ वाला है।'

बेटा, समझिए इस्लाम ने यहाँ क्या किया, क्योंकि इसकी अक्सर ग़लत-फ़हमी होती है। इसने एक यतीम की परवरिश मना नहीं की — नबी ﷺ ने फ़रमाया कि वो और यतीम की परवरिश करने वाला जन्नत में इन दो (उँगलियों) की तरह होंगे, और आपने अपनी उँगलियाँ मिला दीं। जो ठीक किया गया वो एक बच्चे की **नसब मिटाना** था। एक बच्चे का हक़ है कि वो जाने उसका बाप कौन था। और अल्लाह बढ़ाते हैं: '**फ़-इल्-लम् तअ्लमू आबा-अहुम फ़-इख़्वानुकुम फ़िद्-दीनि व मवालीकुम** — और अगर तुम उनके बाप नहीं जानते, तो वो **दीन** में तुम्हारे **भाई** और तुम्हारे दोस्त हैं।'

ख़ंदक़, और वो निगाहें जो फिर गईं

और अब, बेटा, वो जंग जो इस सूरह को उसका नाम देती है।

हिजरत के पाँचवें साल, अरब के क़बीले मिल गए — क़ुरैश, ग़तफ़ान और उनके हलीफ़ — एक अज़ीम लश्कर में, '**अल-अह्ज़ाब**', लश्कर। दस हज़ार आदमी मदीना

पर चढ़ आए, जहाँ मुसलमान तक़रीबन तीन हज़ार थे। ये आख़िरी वार की तरह इरादा किया गया था।

सलमान अल-फ़ारिसी (रज़ि0) के मशवरे पर, मुसलमानों ने शहर की खुली तरफ़ एक **ख़ंदक़** खोदी। नबी ﷺ ने उनके साथ खोदी, अपनी पीठ पर मिट्टी उठाई, और उन्होंने भूक से अपने पेटों पर पत्थर बाँधे — और आता है कि आपने दो बाँधे।

और अल्लाह मुहासिरे का बयान एक ऐसी बारीकी से करते हैं जिसे कोई भी जिसने ख़ौफ़ महसूस किया पहचान लेगा:

'**इज़ जाऊकुम मिन फ़ौक़िकुम व मिन अस्फ़ल मिन्कुम** — जब वो तुम पर तुम्हारे **ऊपर** से और तुम्हारे **नीचे** से आए — **व इज़ ज़ाग़तिल्-अब्सारु व बलग़तिल्-क़ुलूबुल्-हनाजिर** — और जब **निगाहें (ख़ौफ़ से) फिर गईं** और **दिल गलों को आ पहुँचे** — **व तज़ुन्नून बिल्लाहिज़्-ज़ुनूना** — और तुम अल्लाह के बारे में तरह तरह के **गुमान** करने लगे।'

बेटा, महसूस कीजिए ये बयान कितना ईमानदार है। **अल्लाह सहाबा को बे-ख़ौफ़ सुपर-इंसानों के तौर पर पेश नहीं करते।** वो दर्ज करते हैं कि उनकी निगाहें भटकीं, कि उनके दिल उनके गलों तक चढ़ आए, और कि शुबहात उनके ज़ेहनों में आए।

'**हुनालिकब्-तुलियल्-मुअ्मिनून व ज़ुल्ज़िलू ज़िल्ज़ालन शदीदा** — **वहाँ** मोमिनीन **आज़माए** गए और एक **सख़्त लर्ज़े** से **हिलाए** गए।'

बेटा, ये आपके लिए तसल्ली है। **ख़ौफ़ ईमान का उल्टा नहीं।** ये इस उम्मत के बेहतरीन थे, और वो दहशत-ज़दा थे। सवाल कभी ये नहीं कि तुम ख़ौफ़ महसूस करते हो या नहीं — ये है कि तुम डरते हुए **क्या करते** हो।

और मुनाफ़िक़ ज़ाहिर हो गए: '**व इज़ यक़ूलुल्-मुनाफ़िक़ून वल्-लज़ीन फ़ी क़ुलूबिहिम मरज़ुम्-मा व'अदनल्-लाहु व रसूलुहू इल्ला ग़ुरूरा** — जब मुनाफ़िक़ों और जिनके दिलों में बीमारी है ने कहा: अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे **धोके** के सिवा कुछ वादा नहीं किया।' और दूसरों ने कहा: '**इन्न बुयूतना 'औरह** — हमारे घर **खुले (बे-हिफ़ाज़त)** हैं' — जब कि, अल्लाह कहते हैं, वो खुले न थे; वो सिर्फ़ भागना चाहते थे।

और मोमिनीन ने, उसी दहशत का सामना करते हुए, इसके उल्टा कहा: '**व लम्मा र-अल्-मुअ्मिनूनल्-अहज़ाब क़ालू हाज़ा मा व'अदनल्-लाहु व रसूलुहू व सदक़ल्-लाहु व रसूलुह** — और जब मोमिनीन ने **लश्कर देखे**, उन्होंने कहा: **ये वही है जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया**, और अल्लाह और उसके रसूल ने सच कहा — **व मा ज़ादहुम इल्ला ईमानंव्-व तस्लीमा** — **और इसने उन्हें ईमान और सुपुर्दगी में ही बढ़ाया।**'

बेटा, इसे ग़ौर से देखिए। दो गिरोह, एक सूरत-ए-हाल, मुतज़ाद तब्सिरे। उफ़ुक़ पर वही लश्कर: एक गिरोह ने इसे सबूत देखा कि वादा खोखला था; दूसरे ने इसे सबूत देखा कि वो सच्चा था। **मुश्किल किरदार बनाती नहीं — ये उसे ज़ाहिर करती है।**

'**मिनल्-मुअ्मिनीन रिजालुन सदक़ू मा 'आहदुल्-लाह 'अलैह** — मोमिनीन में ऐसे मर्द हैं जो उस पर **सच्चे** उतरे जिसका उन्होंने अल्लाह से अह्द किया — **फ़-मिन्हुम मन क़ज़ा नह्बहू व मिन्हुम मंय्यन्तज़िर** — उन में से कुछ अपना अह्द पूरा कर चुके, और कुछ अभी **इंतेज़ार** में हैं — **व मा बद्दलू तब्दीला** — और उन्होंने कुछ **नहीं बदला।**'

और फिर इख़्तिताम: '**व रद्दल्-लाहुल्-लज़ीन कफ़रू बि-ग़ैज़िहिम लम यनालू ख़ैरा** — और अल्लाह ने काफ़िरों को उनके **ग़ुस्से** समेत **वापस** लौटा दिया; उन्हें **कोई भलाई** न मिली — **व कफ़ल्-लाहुल्-मुअ्मिनीनल्-क़िताल** — **और अल्लाह ने मोमिनीन को लड़ाई से बचा लिया।**'

बेटा, मुहासिरा कैसे ख़त्म हुआ? रात को एक सख़्त हवा आई, ख़ैमे उखाड़ती, देगें उलटती, और उनका इत्तेहाद बिखर गया। कोई एक बड़ी जंग नहीं। 'व कफ़ल्-लाहुल्-मुअ्मिनीनल्-क़िताल' — अल्लाह ने मोमिनीन को लड़ाई से बचा लिया।

बेटा, इसे अगली बार याद रखिए जब आप किसी ऐसे टकराव के लिए ख़ुद को तैयार कर रहे हों जिस से आप डरते हैं। **कभी अल्लाह इसे एक हवा से निपटा देते हैं।**

एक बेहतरीन नमूना

और मुहासिरे के इस बयान के बीच में, बेटा, अल्लाह क़ुरआन की सब से ज़्यादा

नक़्ल की गई आयतों में से एक रखते हैं:

'**लक़द काना लकुम फ़ी रसूलिल्-लाहि उस्वतुन हसनह** — **बेशक तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल में एक बेहतरीन नमूना है** — **लि-मन काना यर्जुल्-लाह वल्-यौमल्-आख़िर व ज़करल्-लाह कसीरा** — उस के लिए जिसकी **उम्मीद** अल्लाह और आख़िरी दिन पर हो, और जो **अल्लाह को बहुत याद** करे।'

बेटा, ग़ौर कीजिए ये आयत **कहाँ** आती है: नमाज़ या आदाब के बाब में नहीं, बल्कि एक मुहासिरे के बीच में — जब नबी ﷺ दूसरों के साथ ख़ंदक़ खोद रहे थे, भूके, सर्दी में, थके हुए मर्दों की हिम्मत बाँधते।

तो यहाँ जिस 'बेहतरीन नमूने' की तरफ़ इशारा है वो **दबाव में** उनका किरदार है। हम में से कोई भी अच्छा बर्ताव कर सकता है जब चीज़ें आसान हों।

और उस से जुड़ी शर्त देखिए: ये नमूना उस के काम आता है 'जिसकी उम्मीद अल्लाह और आख़िरी दिन पर हो, और जो अल्लाह को बहुत याद करे'। बेटा, **सुन्नत की पैरवी महज़ ज़ाहिरी अमल की नक़्ल नहीं; ये इस से निकलती है कि आपकी उम्मीद कहाँ रखी है।**

नबियों की मुहर

फिर सूरह नबी ﷺ के घर-बार से मुताल्लिक़ा मामलात पर बात करती है — और बेटा, उसके मरकज़ में एक क़ानूनी इस्लाह है जिसे सब से खुले-आम तरीक़े से दिखाया जाना ज़रूरी था।

ज़ैद इब्न हारिसह (रज़ि0) नबी ﷺ के ले-पालक बेटे रहे थे, और लोग उन्हें 'ज़ैद इब्न मुहम्मद' कहते थे। जब गोदलिए उस मफ़्हूम में ख़त्म कर दी गई, वो फिर 'ज़ैद इब्न हारिसह' बन गए। उनकी ज़ैनब बिन्त जह्श (रज़ि0) से शादी कामयाब न हुई, और उसके ख़त्म होने के बाद, अल्लाह ने नबी ﷺ को हुक्म दिया कि उनसे निकाह करें — ये अमली तौर पर दिखाने के लिए कि एक ले-पालक बेटे की साबिक़ा बीवी उस तरह हराम नहीं जैसे असली बेटे की होती।

'**फ़-लम्मा क़ज़ा ज़ैदुम्-मिन्हा वतरन ज़व्वज्नाकहा** — तो जब ज़ैद उसकी कोई

ज़रूरत बाक़ी न रखी, **हमने उसका निकाह तुमसे कर दिया** — **लि-कै ला यकून 'अलल्-मुअ्मिनीन हरजुन फ़ी अज़्वाजि अद्'इयाइहिम** — ताकि मोमिनीन पर उनके ले-पालक बेटों की बीवियों के बारे में कोई **तंगी** न हो।'

बेटा, ग़ौर कीजिए कि क़ुरआन दर्ज करता है कि नबी ﷺ ने महसूस किया था कि लोग कैसे रिएक्ट करेंगे, और अल्लाह ने उन्हें ठीक किया: '**व तख़्शन्-नास वल्लाहु अहक़्क़ु अन तख़्शाह** — और तुम **लोगों से डरे**, जब कि **अल्लाह ज़्यादा हक़दार** है कि तुम उस से डरो।'

बेटा, सोचिए ये कितना हैरत-अंगेज़ है कि ये आयत क़ुरआन में है ही। **एक आदमी जो दीन गढ़ रहा हो वो अपनी झिझक का अपना लम्हा और ऊपर से एक इस्लाह दर्ज नहीं करता।** ये वही की ईमानदारी है।

और फिर, बेटा, वो आयत जो नुबुव्वत को हमेशा के लिए बंद कर देती है: '**मा काना मुहम्मदुन अबा अहदिम्-मिर्-रिजालिकुम** — मुहम्मद ﷺ तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं — **व लाकिर्-रसूलल्-लाहि व ख़ातमन्-नबिय्यीन** — **बल्कि** अल्लाह के **रसूल** और **नबियों की मुहर** — **व कानल्-लाहु बि-कुल्लि शै-इन 'अलीमा** — और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है।'

बेटा, 'ख़ातमन्-नबिय्यीन' — नबियों की **मुहर**। मुहर वो है जो एक ख़त को पूरा होने के बाद बंद कर देती है; उसके बाद कुछ नहीं जोड़ा जाता। और नबी ﷺ ने ख़ुद इसे एक ख़ूबसूरत तस्वीर से समझाया: नबियों के दरमियान मेरी मिसाल उस आदमी की तरह है जिसने एक घर बनाया और उसे ख़ूबसूरती से मुकम्मल किया, सिवाए एक कोने में एक ईंट की जगह के। लोग उसके इर्द-गिर्द घूमते उसे सराहते और कहते: काश ये ईंट रख दी जाती। आपने फ़रमाया: मैं वो ईंट हूँ, और मैं आख़िरी नबी हूँ।

बेटा, ये इस्लाम में एक तय-शुदा मामला है: **उनके ﷺ बाद कोई नबी नहीं आता।** जो भी उनके बाद नुबुव्वत का दावा करे वो उस से बाहर निकल गया जो क़ुरआन यहाँ साफ़ कहता है।

नबी की बीवियाँ, और मोमिन औरतें

सूरह उम्महात-उल-मोमिनीन को सीधे मुख़ातिब करती है: '**या निसा-अन्-नबिय्यि लस्तुन्न क-अहदिम्-मिनन्-निसा** — ऐ नबी की बीवियो, तुम औरतों में से **किसी जैसी नहीं** हो — **इनित्-तक़ैतुन्न** — **अगर तुम अल्लाह से डरो।**'

बेटा, शर्त ग़ौर कीजिए: उनका शरफ़ तक़वा से जुड़ा है, महज़ उनकी शादी से नहीं। और उन्हें एक इख़्तियार दिया गया — दुनिया की ज़िंदगी एक अच्छे इंतेज़ाम के साथ, या अल्लाह और उसके रसूल और आख़िरत का घर। **उन में से हर एक ने अल्लाह और उसके रसूल को चुना।**

'**इन्नमा युरीदुल्-लाहु लि-युज़्हिब 'अन्कुमुर्-रिज्स अह्लल्-बैति व युतह्हिरकुम तत्हीरा** — अल्लाह तो बस ये चाहता है कि तुम से नापाकी **दूर** कर दे, ऐ **घरवालो**, और तुम्हें **ख़ूब पाक** कर दे।'

और फिर, बेटा, वो आयत आती है जो गिनाती है कि एक मोमिन मर्द या औरत अस्ल में कैसा दिखता है — दस सिफ़ात, दोनों के लिए, बराबर ज़िक्र हुईं:

'**इन्नल्-मुस्लिमीन वल्-मुस्लिमात** — मुसलमान मर्द और मुसलमान औरतें — **वल्-मुअ्मिनीन वल्-मुअ्मिनात** — मोमिन मर्द और मोमिन औरतें — **वल्-क़ानितीन वल्-क़ानितात** — फ़रमाँबरदार मर्द और फ़रमाँबरदार औरतें — **वस्-सादिक़ीन वस्-सादिक़ात** — सच्चे मर्द और सच्ची औरतें — **वस्-साबिरीन वस्-साबिरात** — सब्र करने वाले मर्द और औरतें — **वल्-ख़ाशि'ईन वल्-ख़ाशि'आत** — आजिज़ी करने वाले मर्द और औरतें — **वल्-मुतसद्दिक़ीन वल्-मुतसद्दिक़ात** — सदक़ा देने वाले मर्द और औरतें — **वस्-साइमीन वस्-साइमात** — रोज़ा रखने वाले मर्द और औरतें — **वल्-हाफ़िज़ीन फ़ुरूजहुम वल्-हाफ़िज़ात** — अपनी पाक-दामनी की हिफ़ाज़त करने वाले मर्द और (वैसी) औरतें — **वज़्-ज़ाकिरीनल्-लाह कसीरंव्-वज़्-ज़ाकिरात** — और अल्लाह को **बहुत याद** करने वाले मर्द और (वैसी) औरतें — **अ'अद्दल्-लाहु लहुम मग़्फ़िरतंव्-व अज्रन 'अज़ीमा** — अल्लाह ने उनके लिए **मग़्फ़िरत और बड़ा अज्र** तैयार किया है।'

बेटा, दस सिफ़ात, हर एक दो बार नाम की गईं — एक बार मर्दों के लिए, एक बार औरतों के लिए। आता है कि ये आयत तब आई जब कुछ औरतों ने पूछा कि क़ुरआन

मर्दों को क्यों मुख़ातिब करता लगता है, और अल्लाह ने दोनों को नाम ले कर जवाब दिया, दस मर्तबा।

और ग़ौर कीजिए कि फ़ेहरिस्त **ज़िक्र** पर ख़त्म होती है — अल्लाह को बहुत याद करना — जो ठीक वही है जो अगला हिस्सा हुक्म देता है: '**या अय्युहल्-लज़ीन आमनुज़्-कुरुल्-लाह ज़िक्रन कसीरा — ऐ ईमान वालो, अल्लाह को बहुत याद करो — व सब्बिहूहु बुक्रतंव्-व असीला** — और सुब्ह-शाम उसकी तस्बीह करो।'

बेटा, तमाम इबादतों में से, ज़िक्र वाहिद है जिसे अल्लाह लफ़्ज़ '**कसीरन**' — बहुत, कसरत से — के साथ हुक्म देते हैं। क्योंकि इसकी कोई क़ीमत नहीं, इसे कोई जगह या शर्त नहीं चाहिए, और ये एक पूरे दिन के ख़ाली लम्हे भर सकता है।

'**हुवल्-लज़ी युसल्ली 'अलैकुम व मलाइकतुहू लि-युख़्रिजकुम मिनज़्-ज़ुलुमाति इलन्-नूर — वही** है जो तुमपर **रहमत** भेजता है, और उसके फ़रिश्ते, ताकि तुम्हें **अंधेरों से रौशनी** में **निकाले — व काना बिल्-मुअ्मिनीन रहीमा** — और वो मोमिनीन पर हमेशा रहीम है।'

बेटा, इस के साथ बैठिए: **जब तुम अल्लाह को याद करते हो, अल्लाह तुम्हें याद करते हैं** — और आयत कहती है वो **तुमपर** अपनी रहमत भेजते हैं।

उनपर दुरूद भेजो, और अमानत

और फिर, बेटा, क़ुरआन की सब से मो'अज़्ज़ज़ आयतों में से एक:

'**इन्नल्-लाह व मलाइकतहू युसल्लून 'अलन्-नबिय्य — बेशक, अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर दुरूद भेजते हैं — या अय्युहल्-लज़ीन आमनू सल्लू 'अलैहि व सल्लिमू तस्लीमा — ऐ ईमान वालो, उनपर दुरूद भेजो और ख़ूब सलाम भेजो।**'

बेटा, बनावट देखिए। अल्लाह पहले तुम्हें बताते हैं कि **वो** और उसके फ़रिश्ते क्या कर रहे हैं — और फिर तुम्हें उस में शामिल होने की दावत देते हैं। ये वाहिद इबादत है जिसे यूँ बयान किया गया।

और जब ये आयत नाज़िल हुई, सहाबा ने पूछा कि वो दुरूद कैसे भेजें, और आपने ﷺ

उन्हें वो अल्फ़ाज़ सिखाए जो हम आज भी हर नमाज़ में कहते हैं: 'अल्लाहुम्म सल्लि 'अला मुहम्मदिंव्-व 'अला आलि मुहम्मद...'

और आपने ﷺ फ़रमाया: जो मुझपर एक बार दुरूद भेजे, अल्लाह उसपर **दस बार** रहमत भेजते हैं। बेटा, चंद अल्फ़ाज़ के बदले दस वापसी। एक आदमी ने आप से पूछा कि वो अपनी दुआ का कितना हिस्सा दुरूद के लिए रखे, और जब उसने कहा 'पूरा', तो नबी ﷺ ने उसे फ़रमाया: तो तुम्हारी फ़िक्रें दूर कर दी जाएँगी और तुम्हारे गुनाह बख़्श दिए जाएँगे।

और सूरह ख़त्म होती है, बेटा, एक ऐसी आयत से जो इंसान होने का बोझ बयान करती है:

'**इन्ना 'अरज़्नल्-अमानत 'अलस्-समावाति वल्-अर्ज़ि वल्-जिबालि** — **बेशक, हमने अमानत को आसमानों, ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश किया** — **फ़-अबैन अंय्यह्मिल्नहा व अश्फ़क़्न मिन्हा** — **और उन्होंने इसे उठाने से इनकार किया और इस से डरे** — **व हमलहल्-इंसान** — **मगर इंसान ने इसे उठा लिया** — **इन्नहू काना ज़लूमन जहूला** — बेशक, वो **ज़ालिम** और **जाहिल** था।'

बेटा, '**अल-अमानह**' — अमानत। उलमा ने इसे दीन की ज़िम्मेदारियों के तौर पर समझाया: इख़्तियार की ज़िम्मेदारी, हुक्म दिए और जवाब-देह ठहराए जाने की, ख़्वाहिशों वाले जिस्म में अल्लाह का क़ानून उठाने की।

और बाक़ी मख़्लूक़ का जवाब देखिए: आसमान, ज़मीन और पहाड़ — सब से बड़ी और मज़बूत चीज़ें जो हम जानते हैं — उनके सामने पेश की गई और उन्होंने ख़ौफ़ से **इनकार** कर दिया।

और इस छोटी मख़्लूक़ ने, पानी के एक क़तरे से बनी, हाँ कहा।

बेटा, ये या तो किसी भी क़िस्म को दिया गया सब से बड़ा शरफ़ है, या कभी उठाया गया सब से भारी बोझ — और ये दोनों है। **आप वो चीज़ उठाए हुए हैं जिस से पहाड़ डरते थे।**

और इंसान का बयान — 'ज़लूमन जहूला', बड़ा ज़ालिम और बहुत जाहिल — एक

तारीफ़ नहीं, मगर ये ईमानदार है: हमने उस से ज़्यादा उठा लिया जितना हम समझते थे।

तो इसका क्या किया जाए, बेटा? ठीक अगले अल्फ़ाज़ मक़्सद बताते हैं: **'लि-यु'अज़्ज़िबल्-लाहुल्-मुनाफ़िक़ीन... व यतूबल्-लाहु 'अलल्-मुअ्मिनीन वल्-मुअ्मिनात** — ...और ताकि अल्लाह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों की **तौबह क़ुबूल** करे। **व कानल्-लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा** — और अल्लाह हमेशा बख़्शने वाला, रहीम है।'

बेटा, देखिए सूरह कहाँ ख़त्म होती है: **तौबह और मग़्फ़िरत पर।** तुमने अपने लिए कुछ बहुत भारी उठा लिया — और इंतेज़ाम में ठीक इसी वजह से तौबह का एक दरवाज़ा शामिल है। अमानत कभी इस फ़र्ज़ पर नहीं दी गई कि तुम इसे कामिल तरह उठाओगे। ये एक ग़फ़ूर और रहीम के साथ दी गई।

इस सूरह से क्या सीखा

1. एक बच्चे की नसब उसका हक़ है: यतीमों की दिल खोल कर परवरिश करो, मगर कभी न मिटाओ कि उनका बाप कौन था।

2. ख़ौफ़ ईमान का उल्टा नहीं — इस उम्मत के बेहतरीन लोगों के दिल उनके गलों में थे।

3. मुश्किल किरदार बनाती नहीं, उसे ज़ाहिर करती है: दो गिरोह ने वही लश्कर देखा और इसे उल्टा पढ़ा।

4. कभी अल्लाह जिस से तुम डरते हो उसे एक हवा से निपटा देते हैं: 'और अल्लाह ने मोमिनीन को लड़ाई से बचा लिया'।

5. 'बेहतरीन नमूना' ख़ंदक़ में दिखाया गया — ख़ुद को उस से परखो कि तुम दबाव में कैसा बर्ताव करते हो।

6. दस सिफ़ात, मर्दों और औरतों के लिए बराबर नाम की गईं — एक मोमिन का मेयार दोनों के लिए एक है।

7. तुम एक ऐसी अमानत उठाए हो जिसे पहाड़ों ने इनकार किया — और ये तुम्हें एक तौबह के दरवाज़े के साथ सौंपी गई।

अल्लाहुम्म सल्लि व सल्लिम 'अला नबिय्यिना मुहम्मद — या अल्लाह, अमानत उठाने में हमारी मदद कीजिए और जहाँ हम कोताही करें हमें बख़्श दीजिए। आमीन।